2 अगस्त 2015, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI प्रतिदिन
सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रातः 7.00 से 7.30 बजे तक

वर्ष : 38, अंक : 9 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अगस्त (प्रथम), 2015 (वीर नि. संवत्-2541) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

गुरुवाणी मंथन शिविर संपन्न

सोनगढ (गुज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह में दिनांक 15 से 19 जुलाई तक श्री कुन्दकुन्द कहान तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई एवं श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई के संयुक्त तत्त्वावधान में गुरुवाणी मंथन शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर का मुख्य उद्देश्य आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की सुरक्षित वाणी तथा उनके द्वारा उद्घाटित अध्यात्म के उत्कृष्ट रहस्यों का जन-जन में संचार हो, एतदर्थ तत्त्वज्ञान के मर्मज्ञ विद्वानों के सानिध्य में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर, आचार्य अकलंकदेव जैन न्याय महाविद्यालय बांसवाड़ा एवं आचार्य धरसेन महाविद्यालय कोटा में अध्ययनरत शास्त्री वर्ग के छात्रों के साथ उनके स्थानीय प्राध्यापकों एवं अन्य 10 मुमुक्षु संस्थाओं के अध्यापकों को आमंत्रित किया गया।

इस शिविर में गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित नीलेशभाई शाह मुम्बई एवं पण्डित चेतनभाई मेहता के प्रवचनों व कक्षाओं का लाभ मिला। प्रवचनों व कक्षाओं के अन्तर्गत आधा घंटा गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन होता था एवं तत्पश्चात् आमंत्रित विद्वान द्वारा उस पर व्याख्यान किया जाता था। विद्वानों द्वारा गुरुदेवश्री की प्रतिपादन शैली एवं विषय स्पष्टीकरण शैली पर भी प्रकाश डाला गया। इसके अतिरिक्त विभिन्न विद्वानों द्वारा गुरुदेवश्री के जीवन-दर्शन, दिनचर्या, तत्त्वप्रतिपादन की कला, उनके जीवन की विविध घटनाओं का चित्रण प्रवचनों के माध्यम से किया गया। एक दिन शंका-समाधान के रूप में पण्डित अभयकुमारजी ने गुरुदेवश्री से सम्बन्धित अनेक घटनाओं एवं समाज में चर्चित विविध भ्रांतियों व विसंगतियों को दूर किया।

इस अवसर पर 'गुरुदेव मुझे प्रिय क्यों ?' विषय पर दो दिवसीय गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें अनेक विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

कार्यक्रम का उद्घाटन श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा एवं श्री हीरालालजी काला भावनगर द्वारा किया गया। अध्यक्षता दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट सोनगढ के अध्यक्ष श्री हंसमुखभाई वोरा एवं ध्वजारोहण श्री विपिनभाई बाधर जामनगर ने किया। मुख्य अतिथियों के रूप में श्री अनंतभाई शेठ मुम्बई, श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई, श्री अमृतभाई मेहता फतेहपुर, श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा, श्री आलोकजी कानपुर, श्री बीनूभाई मुम्बई, श्री अशोकजी जबलपुर, श्री अजितजी बड़ौदा आदि महानुभाव उपस्थित थे।

उपर्युक्त विद्वानों एवं अतिथियों के अतिरिक्त शिविर में देश के विभिन्न स्थानों में संचालित मुमुक्षु संस्थाओं के प्रतिनिधि विद्वानों में जयपुर से पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित उदयजी चौगुले, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री; बांसवाड़ा से पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री, पण्डित चैतन्यजी शास्त्री; कोटा से पण्डित रतनचंदजी शास्त्री, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित राहुलजी शास्त्री; सोनगढ से पण्डित सोनूजी शास्त्री, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री, पण्डित आतमजी शास्त्री; द्रोणगिरि से पण्डित शुभमजी शास्त्री; नागपुर से पण्डित भूषणजी शास्त्री; सोनागिर से पण्डित स्वतंत्रभूषणजी शास्त्री; चैतन्यधाम से पण्डित सचिनजी शास्त्री; खनियांधाना से पण्डित विकासजी शास्त्री; सन्मति संस्कार कोटा से पण्डित जयकुमारजी, पण्डित सचिनजी शास्त्री, पण्डित अमितजी शास्त्री; दिल्ली से विदुषी राजकुमारीजी एवं उदयपुर से विदुषी ममताजी जैन का समागम प्राप्त हुआ।

शिविर में शास्त्री कक्षा में अध्ययनरत 151 छात्रों ने भाग लिया तथा शिविर के दौरान उनके अध्ययन में शामिल पाठ्यक्रम के आधार पर परीक्षा भी ली गई।

अंतिम दिन अनेक श्रेष्ठीजनों व विद्वानों की उपस्थिति में समापन समारोह हुआ, जिसमें जयपुर से अच्युतकांत जैन, चर्चित जैन व निकुंज जैन; बांसवाड़ा से दीपक जैन ने तथा कोटा से प्रासुक जैन ने शिविर सम्बन्धी विचार प्रस्तुत किये। सभी छात्रों ने शिविर की जमकर प्रशंसा की तथा प्रतिवर्ष ऐसा शिविर लगने की भावना व्यक्त की। तीनों शास्त्री महाविद्यालयों की ओर से पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने दोनों आयोजक ट्रस्टों का आभार व्यक्त किया।

सभा के संचालक व शिविर के संयोजक पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर थे। अन्त में श्री महीपालजी ज्ञायक ने शिविर की उपलब्धियाँ बताते हुए समस्त विद्वानों, श्रेष्ठियों एवं शास्त्री विद्यार्थियों का आभार व्यक्त किया।

शिविर के पश्चात् टोडरमल महाविद्यालय जयपुर के छात्रों ने अपने अध्यापकों के साथ सिद्धक्षेत्र पालीताणा, गुरुदेवश्री की जन्मभूमि उमराला एवं चैतन्यधाम की यात्रा का भी लाभ लिया। ●

सम्पादकीय –

विद्या और विज्ञान की वार्ता

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

किसी समस्या विशेष में उलझे विज्ञान को चिन्तन मुद्रा में बैठा देख उसकी पत्नी विद्या ने हँसी के मूड में कहा –''अब क्या सोच रहे हो प्राणनाथ ! इतनी बड़ी समस्या सुलझने के बाद अब और किस उलझन में उलझ गये हो ? जरा घड़ी तो देखो, क्या बज रहा है ? क्या आज नहाने से लेकर खाने तक सभी कामों की छुट्टी कर दी है ? और हाँ, एक दिन आप यह भी तो कह रहे थे कि अब मैं प्रतिदिन जिनमंदिर में पूजन करने और प्रवचन सुनने जाया करूँगा ? क्या हुआ उस संकल्प का ?''

''विद्या ! आज वर्षों बाद तुम्हारी प्रसन्न मुखमुद्रा पर झलकते रूप लावण्य को देखकर मैं सोच रहा था – 'क्या उदासीनता सचमुच सौन्दर्य की शत्रु है ? जिसने मेरी प्रिया के सौन्दर्य को मुझसे छीन लिया था'– ऐसी उदासीनता और चिन्ता जीवन में कभी किसी को न हो। पर तुम्हारी उदासीनता और चिन्ता का कारण और कोई नहीं, मैं स्वयं ही था।

भला कोई पत्नी अपने पति को सुरा और सुन्दरी के हाथ की कठपुतली बना देखते हुए प्रसन्न और निश्चिन्त कैसे रह सकती है ?''

विज्ञान के सन्मार्ग पर आ जाने से विद्या सर्वाधिक प्रसन्न थी। जब उसकी प्रसन्नता हृदय में नहीं समाई तो उसके मुखमंडल पर बिखरने लगी थी। वह सुन्दर तो थी ही, उसकी प्रसन्नता ने उसकी सुन्दरता पर और भी चार चाँद लगा दिये थे। इससे उसका सौन्दर्य सौ गुना हो गुलाब की तरह खिल उठा था।

विद्या की प्रसन्नता से बढे हुये सौन्दर्य को देखकर विज्ञान इस निष्कर्ष पर पहुँच चुका था कि 'मुख का सर्वश्रेष्ठ सौन्दर्य-प्रसाधन प्रसन्नता ही है।'

''काश ! संजू और उसके साथी भी अपनी बुरी आदत छोड़ दें, दुर्व्यसनों के दलदल से निकलकर सन्मार्ग पर आ जावें तो उनके परिवार की भी ढेरों खुशियाँ लौट सकती हैं और वे भी हम जैसे ही प्रसन्न और सुखी हो सकते हैं।''

ऐसा कहते हुए उसने आगे कहा –''क्यों न इस दिशा में कुछ प्रयत्न किया जाये ?''

विद्या ने कहा – ''विज्ञान ! तुम्हारा विचार तो सर्वोत्तम है, परन्तु .....''

बीच में ही विद्या के मुँह की बात छीनते हुए विज्ञान बोला – ''देखो विद्या ! तुम्हारी किन्तु ....परन्तु ....अभी नहीं चलेगी ! तुम्हारी अपेक्षा उनका दु:ख-दर्द मैं अधिक महसूस कर रहा हूँ। वे अभी सब तरफ से असहाय हैं। एक तो दुर्व्यसनों के कारण दिन-प्रतिदिन उनकी घटती कार्यक्षमता; दूसरे, कुपोषण के कारण आये दिन बीमारियों का प्रकोप; तीसरे, अर्थाभाव के कारण परस्पर पारिवारिक कलह और मानसिक अशान्ति – इन सबके कारण उनका जीवन नरक बन रहा है नरक !

यदि ऐसी स्थिति में भी उन्हें नहीं सम्हाला गया तो उनकी तो जो दुर्गति हो रही है सो हो ही रही है, वे अपन लोगों को भी पुन: किसी धर्मसंकट में डाल सकते हैं। **'मरता क्या नहीं करता।'** अत: उनको संभालना भी तो उतना ही जरूरी है, जितना जरूरी पूजन-पाठ करना है। भले ही इसके लिये अपने को कुछ भी त्याग – समर्पण क्यों न करना पड़े ? उन्हें तो उस संकट से उबारना ही होगा।''

विज्ञान का संजू और उनके साथियों के प्रति ऐसा सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार देखकर विद्या फिर सशंकित हो उठी। उसे ऐसा विचार आया कि –''मेरे द्वारा संजू और राजू के बारे में इतना सबकुछ स्पष्ट बता देने पर भी विज्ञान को क्रोध आने के बजाय उल्टी उनके प्रति इतनी गहरी सहानुभूति है, इतनी हमदर्दी है; इससे तो ऐसा लगता है कि अभी भी कुछ दाल में काला है, अभी भी विज्ञान के मन का झुकाव उधर को ही है, वहाँ से उनका मन पलटा नहीं है। अन्यथा इतना सब सुनने के बाद तो उसे आग-बबूला हो जाना चाहिये था। खैर !''

एक ठंडी सांस लेते हुये उसने फिर सोचा –''चलो कोई बात नहीं, अभी उनके प्रति सहानुभूति ही तो दिखाई है, पुन: पूर्ववत उनके साथ उठने-बैठने और राग-रंग में सम्मिलित होने की बात तो नहीं कही। संभव है केवल सहानुभूति और करुणा की भावना ही हो; ये सज्जन और भावुक तो हैं ही। अत: थोड़ा धैर्य से काम लेना चाहिये। शंकायें-आशंकायें प्रगट करने में व्यर्थ ही बनी-बनाई बात बिगड़ सकती है।''

ऐसा विचार कर विद्या ने कहा –''यह अपने लिये कौनसी बड़ी समस्या है ? जिसके लिये आप इतने चिंतित हैं। यदि आपके मन में उनके प्रति ऐसी ही सहानुभूति है, करुणा है और आप उनकी सहायता करना चाहते हैं तो अवश्य करिये, मेरी भी इसमें सहमति है। सौभाग्य से इसके लिये अपने पास कोई कमी भी नहीं है; पर इसके लिये आपको स्वयं वहाँ जाने की जरूरत नहीं है। मैं आपको अभी वहाँ जाने भी नहीं दूंगी। पराये मन की कोई क्या जाने ? क्रोधावेश में यदि वे लोग अनर्थ कर बैठे तो ?

''नहीं, नहीं ....विद्या ! वहाँ मुझे स्वयं ही जाना पड़ेगा, मेरे जाये बिना काम नहीं चलेगा। मुझे केवल आर्थिक सहयोग ही नहीं करना है और भी बहुत कुछ करना है। तुम नहीं समझ सकोगी अभी; क्योंकि तुम्हारे मन में उनके प्रति अभी आक्रोश है, घृणा है, क्षोभ है और है अविश्वास की भावना। होना भी चाहिये; क्योंकि

किसी असहाय, अबला के साथ यदि कोई ऐसा अन्याय करता है, उसकी मजबूरी का अनुचित लाभ उठाने जैसा कुत्सित कार्य करने की कुचेष्टा करता है तो उसके प्रति प्रतिशोध की भावना होना स्वाभाविक ही है। पर किसी को सुधारने या सन्मार्ग पर लाने का उपाय घृणा नहीं है। सन्मार्ग पर लाने के लिये तो उन्हें अपनाना पड़ेगा, अपना बनाना पड़ेगा।''

विद्या सोचती है –''विज्ञान बुद्धिमान है, प्रतिभाशाली है, भाषणकला में भी निपुण है; अत: बातों की तो उसके पास क्या कमी ? पर मैं उसकी इन बातों में आकर उसे पुन: उसी दलदल में जाने को 'हाँ' कैसे कह सकती हूँ ? पर मेरे ना करने से भी क्या होगा ? वह जिद्दी भी तो कम नहीं है। जो ठान लेगा, वही करके छोड़ेगा, क्या करूँ ?''

विज्ञान ने विद्या के चेहरे से ही उसके अन्तर्मन में हुये अन्तर्द्वन्द्व को पहचान लिया। अत: विद्या कुछ कहे, इसके पूर्व ही उसने अपनी सफाई देते हुये कहा –''विद्या ! मैं वहाँ जाने के पहले तुम्हें यह विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि तुम मेरी ओर से पूर्ण निश्चिन्त हो जाओ। अब मैं काजल की कोठरी में जाकर भी काजल के धब्बों से बचकर रहूँगा; पर मैं जाऊँगा अवश्य।''

विद्या ने उसके उत्तर में विनम्रभाव से कहा –''प्राणनाथ ! मुझे आप पर पूर्ण विश्वास है, मैं आपके हृदय की सरलता से भलीभाँति परिचित हो गई हूँ; पर....।'

मुँह की बात छीनते हुये विज्ञान ने कहा –''पर क्या ? वे मेरी सरलता का फिर दुरुपयोग करेंगे, मुझे किसी चाल में फंसा लेंगे ? यही न, भूलें किससे नहीं होती, पर ....'' ''नहीं विद्या ऐसा कुछ न सोचो। वे भी इतने बुरे नहीं हैं।''

विद्या ने अपना स्पष्टीकरण देते हुये कहा –''मेरा कहना यह नहीं है और न मैं अभी उन पर कोई अविश्वास ही कर रही हूँ। मेरा कहना तो यह है कि यह इतनी बड़ी समस्या नहीं है, ऐसा कोई बहुत बड़ा काम भी नहीं है, जिसके लिये आप इतने उत्सुक हो रहे हैं, धीरे–धीरे शान्ति से सब हो जायेगा। ये दुर्व्यसनों की तो आदतें ही ऐसी होती हैं, जो धीरे–धीरे ही जाती हैं। अत: इस काम के लिये आपको व्यर्थ ही अपना समय और शक्ति खराब करने की जरूरत नहीं है।''

''विद्या ! तुम मुझसे यह जो कुछ भी कह रही हो, उसके बारे में एकबार पुन: इस दृष्टि से विचार करो कि मानो मैं आज भी उनका वैसा ही दुर्व्यसनी साथी हूँ। क्या उस परिस्थिति में भी तुम्हारे चिन्तन की यही मन:स्थिति रहती? यदि नहीं, तो मुझे इस कार्य को एक महत्वपूर्ण कार्य मानकर करने दो।'धीरे–धीरे सब हो जायेगा'– यह कहकर उपेक्षा मत करो।''

एक महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत करते हुये विज्ञान ने कहा – ''देखो, विद्या! कोई भी काम अपने आपमें छोटा या बड़ा नहीं होता। काम तो केवल काम होता है। काम को छोटा या बड़ा मानते ही उसकी सफलता की संभावना ही क्षीण हो जाती है।

यदि काम को छोटा समझ लिया गया तो उस काम को करने का मन ही नहीं होता और यदि मन मारकर किया भी तो स्वभावत: न उसमें रुचि होगी, न उत्साह और न उस पर उतना ध्यान भी दिया जा सकेगा, जितना उसकी सफलता के लिये अपेक्षित होता है।

यदि काम को बड़ा समझ लिया गया तो 'इतना बड़ा काम मेरे वश की बात नहीं' है इस विचार से उस काम को करने की या उसकी जिम्मेदारी अपने हाथ में लेने की हिम्मत ही नहीं होती।

जबकि किसी भी काम में सफलता प्राप्त करने के लिये श्रम, साहस, समय और ध्यान का पूरा केन्द्रीकरण आवश्यक होता है।

विद्या ! इसी से संबंधित आज दूसरी समस्या है उन नन्हे–मुन्ने बालकों की, जो भारत के भावी भाग्यविधाता हैं और हैं समाज के भावी कर्णधार।

आज बालकों को न तो कोई नैतिक शिक्षा मिल रही है और न कोई धार्मिक संस्कार ! इसके बदले उन्हें आज मिल रही है विशुद्ध अर्थकारी शिक्षा और पश्चिमी भोग प्रधान भौतिक संस्कार।

यदि यही स्थिति रही तो सोच लो – कैसे होंगे ये भारत के भावी भाग्यविधाता और समाज के भावी कर्णधार ?

यही भूल तो मेरी शिक्षा और संस्कारों के सम्बन्ध में हुई थी। क्या तुम्हें ज्ञात नहीं कि मुझको राह पर लाने के लिये तुम्हारे साथ ज्ञान और सुदर्शन को भी कितने पापड़ बेलने पड़े ? जरा कल्पना तो करो, यदि वे इस दिशा में प्रयत्न नहीं करते तो आज मेरी स्थिति क्या होती ?

विद्या ! बालकों के शिक्षा और संस्कारों के क्षेत्र में पुरुषों की तुलना में महिलायें अधिक काम कर सकती हैं। माँ को बालक की प्रथम पाठशाला कहा जाता है। अत: महिलाओं में जागृति लाने से यह काम तुम्हारे द्वारा अच्छी तरह हो सकता है।''

अपने मित्र संजू और उसके साथियों को सन्मार्ग पर लाने तथा उनका जीवन सुखी बनाने के विज्ञान के दृढ संकल्प और पवित्र भाव को देखकर विद्या ने भी विज्ञान का हर तरह से सहयोग करने का मानस बना लिया था।

अत: विज्ञान के विचारों में अपनी सहमति प्रगट करके वह अपने घरेलू काम में लग गई। ●

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

16 अगस्त	उदयपुर	शोधप्रबन्ध का विमोचन
09 से 16 सितम्बर	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्यूषण
18 से 27 सितम्बर	दिल्ली	दशलक्षण पर्व
18 से 27 अक्टूबर	जयपुर	शिक्षण शिविर
31 अक्टू. व 1 नव.	इन्दौर (ढाईद्वीप)	वेदी शिलान्यास

धर्म क्या, क्यों, कैसे और किसके लिए – *(सत्रहवीं कड़ी, गतांक से आगे)*

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

अपने भविष्य की चिंता और परिकल्पना में मैं कभी अपना वर्तमान भी ढंग से नहीं जी पाया और अब; अब तो मेरे भविष्य पर, मेरे भावी अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लग गया है, मैं भविष्य में भी रहूँगा, इस मानव जीवन के बाद भी मेरा अस्तित्व बना रहेगा, मैं नष्ट नहीं हो जाऊँगा, इस बात का निर्णय कैसे हो ? यह जानने के लिए आगे पढिये –

तत्समय (उस समय) वर्तमान (पर्याय) में मैं जो था, आखिर उसमें मुझे ममत्व हुआ क्यों नहीं ? क्योंकि उस समय मुझे जो कुछ दिखाई देता था वह सब क्षणिक था, सापेक्ष था, पराश्रित था। किसी की अपेक्षा बगैर स्वतंत्र रूप से मैं कुछ भी नहीं था, उससे ममत्व होता कैसे ?

जो क्षणिक है वह समय के साथ नष्ट हो ही जाता है, जो सापेक्ष है वह संयोग का वियोग होने पर नष्ट होना ही है और जो पराश्रित है वह कब तक मेरे साथ रहेगा ?

इसप्रकार मैं बालक नहीं रहूँगा, मैं किशोर नहीं रहूँगा, मैं जवान नहीं रहूँगा पर मैं तब भी रहूँगा इसलिये ये सब अवस्थाएं ''मैं'' नहीं हो सकते हैं, ''मैं'' नहीं हूँ।

क्या इससे यह साबित नहीं होता है कि **जो क्षणिक और पराश्रित हो वह मुझे स्वयं ''मैं'' के रूप में स्वीकार नहीं है।**

और यही सही भी है।

इससे सिद्ध होता है कि मुझे क्षणिकता नहीं स्थायित्व चाहिए, मुझे नश्वरता इष्ट नहीं मुझे तो मात्र ध्रुवता ही अभीष्ट है।

मैंने अब तक जिसमें भी ''मैं'' को स्थापित किया वह सब तो क्षणिक और नश्वर था, वह मैं कैसे हो सकता हूँ, उसमें मुझे सुख कैसे मिलता ?

प्रश्न तो यह है कि यदि सचमुच ही मैं किसी क्षणिक अवस्था (पर्याय) को ''मैं'' मानना मुझे स्वीकार ही नहीं तो मैंने त्रैकालिक (ध्रुव) ''मैं'' की खोज क्यों नहीं की ?

क्या यह मेरा प्रथम कर्तव्य नहीं था ?

ऊपरी तौर पर देखने पर हमें लगता है कि हमें मात्र वर्तमान की चिन्ता है और हमें भविष्य की परवाह ही नहीं है; क्योंकि हम निरन्तर अपने वर्तमान को संवारने में ही व्यस्त दिखाई देते हैं तथा वर्तमान के छोटे–छोटे लाभ के लिये ऐसे बड़े–बड़े पाप करने से नहीं हिचकते हैं, जिनका परिणाम भविष्य में बहुत ही अनिष्टकारी होना तय है। पर वास्तविकता यह है कि हम चिंतित तो मात्र भविष्य के प्रति ही रहते हैं, वर्तमान की तो हमें परवाह ही कहाँ है ?

क्यों ?

क्योंकि एक तो यूं भी सच्चा वर्तमान तो मात्र एक समय का ही है, उसकी तो किसको क्या परवाह हो पर यदि हम अत्यन्त निकट भविष्य को भी वर्तमान ही मान लें (आगामी 5–10 वर्ष या अधिकतम यह जीवन) तब भी इतनी क्षमता तो हममें है ही कि हम एक सीमित समय तो कितनी भी प्रतिकूलता में कैसे भी गुजार सकते हैं, बशर्ते हमें उज्ज्वल भविष्य की आशा बनी रहे।

अनादिकाल से आज तक हम कष्ट सहने के इस कदर आदी हो चुके हैं कि छोटे–मोटे कष्ट तो हमें कष्ट से ही नहीं लगते हैं और बड़े से बड़ा कष्ट भी यदि कुछ ही काल के लिये हो तो हम उससे परेशान नहीं होते हैं। परेशान नहीं होना तो और बात है पर कभी–कभी तो हम उन्हें आनन्द भी मान बैठते हैं, आपने अक्सर लोगों को कहते सुना होगा "it is good for change for a while, something different then daily routine" देखा भी जाता है न कि भारी से भारी बोझ यदि हमें कुछ ही पलों के लिए उठाना हो तो वह हमें बोझ सा ही नहीं लगता है, कष्टकर ही नहीं लगता है, हाँ यदि कोई 100–200 ग्राम बोझ भी हमें लगातार 10–20 घंटे तक उठाये रहने के लिए कहे तो हमें असुविधा महसूस होती है। इसप्रकार यह स्पष्ट है कि वे कष्ट जो क्षणिक हों हमें कष्ट से ही नहीं लगते हैं, हम तो मात्र दूरगामी परिणामों के बारे में चिन्तित रहते हैं, डर तो हमें आगामी अनंतकाल तक की प्रतिकूलता से लगता है।

उक्त तथ्य यदि सत्य है तो क्या हमारा अपना (आत्मा का) दीर्घकालीन अस्तित्व हमारे चिंतन का विषय नहीं होना चाहिए ?

अवश्य ही होना चाहिए प्रश्न तो यह है कि हम इस बात को कैसे स्वीकार करें कि अपने इस मानव जीवन से पूर्व भी मेरी सत्ता थी, मैं था और अब इस जीवन के बाद भी मैं रहूँगा ?

हमारे पास न तो कोई साधन है यह सब जानने का और न ही कोई प्रमाण; हमारे पास मात्र वे शास्त्र हैं, जिनमें यह लिखा है कि ''यह आत्मा न तो कभी जन्मता है और न ही मरता है, यह तो अनादि–अनंत है'', तो क्या हम मात्र इसलिये यह मान बैठे कि ''मैं ऐसा आत्मा हूँ जो अनादि–अनंत है और न तो कभी मरता है और न ही नष्ट होता है''।

यह निर्णय हमें ही करना है कि हम शास्त्रों में लिखी इस बात को स्वीकार करें या न करें। आत्मा की अनादि–अनन्तता के प्रति हमारा संदेह क्यों अनुचित है, यह किस तरह हमारे अपने लिए अहितकर है। यह जानने के लिये पढें इस शृंखला की अगली (अठारहवीं) कड़ी, अगले अंक में – **(क्रमशः)**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

दशलक्षण पर्व हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र भेजें

टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा दशलक्षण पर्व पर प्रवचनार्थ जाने वाले सभी विद्वानों से अनुरोध है कि वे इस वर्ष भी दशलक्षण पर्व में जाने हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र जयपुर कार्यालय को पत्र/फोन/ई-मेल द्वारा भेजें।

यद्यपि सभी विद्वानों को जयपुर कार्यालय से अनुरोध पत्र डाक, एस.एम.एस./वॉट्सएप द्वारा भेजे जा रहे हैं; परन्तु यदि डाक की गड़बड़ी से समय पर न मिले हो तो भी अपनी स्वीकृति हमें शीघ्र नोट करा देवें।

- महामंत्री, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

स्वीकृति भेजने का पता - **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015 फोन नं.-0141-2705581, 2707458, मो.9785643202(पीयूष जैन)E-mail : ptstjaipur@yahoo.com**

प्रवेश फार्म शीघ्र भेजें

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए-4, बापूनगर, जयपुर की ग्रीष्मकालीन परीक्षायें 16, 17 व 18 अगस्त 2015 को होने जा रही है, जिसका विस्तृत परीक्षा कार्यक्रम पूर्व के अंक में प्रकाशित हो चुका है। जिन परीक्षा केन्द्रों ने अभी तक भी छात्र प्रवेश फार्म भरकर नहीं भेजे हो, वे तत्काल भेजने का कष्ट करें, ताकि समय रहते रोल नम्बर, प्रश्नपत्र आदि परीक्षा सामग्री भेजी जा सके, कदाचित जिन केन्द्रों के पास छात्र प्रवेश फार्म न हों, वे फोन करके अविलम्ब मंगा लेवें। **- ओ. पी. आचार्य**

दशलक्षण पर्व हेतु आमंत्रण शीघ्र भेजें

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को आमंत्रण-पत्र समाज/मंदिर/संस्था के लेटर पेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके।

पत्र में अपना पूर्ण पता (पिनकोड सहित) एवं फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) भेजें एवं तत्काल संपर्क की सुविधा हेतु ई-मेल आई.डी. हो तो अवश्य भेज देवें।

अनेक बार समाज द्वारा दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रवचन हेतु विद्वानों को अपने यहाँ बुलाने का आमंत्रण अन्तिम समय पर प्राप्त होता है, जिससे व्यवस्था करने में कठिनाई होती है; अत: समाज/मंदिर के व्यवस्थापकों से निवेदन है कि वे अपने यहाँ से आमंत्रण-पत्र तत्काल भिजवायें। **- महामंत्री, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट**

आप अपने आमंत्रण पत्र निम्न पते पर भेज सकते हैं-

पत्राचार का पता - **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015 फोन नं.-0141-2705581, 2707458, मोबा. 09785643202 (पीयूष जैन) E-mail : ptstjaipur@yahoo.com**

अष्टाह्निका महापर्व सानन्द संपन्न

(1) जयपुर (राज.) : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर श्री दिगम्बर जैन मंदिर जनता कॉलोनी में दिनांक 24 से 31 जुलाई तक श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन किया गया।

ध्वजारोहण श्री प्रकाशचंदजी सुभाषजी अजमेरा परिवार जयपुर ने एवं मंगल कलश स्थापना श्रीमती हीरादेवी अनिलकुमार राकेशकुमार गंगवाल परिवार ने किया। कार्यक्रम में श्री परितोषवर्धन जैन, श्री सुधीरजी गंगवाल एवं श्री उजासजी जैन का सक्रिय सहयोग रहा।

विधि विधान के समस्त कार्य डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के निर्देशन में पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित पंकजजी शास्त्री एवं पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री के सहयोग से संपन्न हुये।

इस अवसर पर प्रतिदिन डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के प्रवचनों का लाभ मिला। प्रतिदिन जिनेन्द्र भक्ति के अतिरिक्त एक दिन बापूनगर महिला मंडल द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित हुआ। कार्यक्रम में प्रतिदिन 150-200 साधर्मियों ने उपस्थित होकर लाभ लिया।

(2) नागपुर-इतवारी (महा.) : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर इतवारी स्थित श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 23 से 31 जुलाई तक पंचमेरु नंदीश्वर मंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर एवं पण्डित आकेशजी उभेगांव द्वारा प्रात: अलिंगग्रहण एवं सायंकाल न्याय के विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि विधान के समस्त कार्य पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित आकेशजी उभेगांव, पण्डित मनीषजी शास्त्री 'सिद्धांत' एवं पण्डित नितिनजी झालरापाटन द्वारा संपन्न हुये।

(3) नागपुर-लक्ष्मीनगर (महा.) : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर श्री दिगम्बर जैन मंदिर में श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन किया गया।

विधि विधान के कार्य पण्डित श्रेणिकजी जबलपुर एवं श्री रविभैया ललितपुर द्वारा संपन्न हुये। साथ ही इनके प्रवचनों का भी लाभ मिला।

शोक समाचार

(1) प्रतापगढ (राज.) निवासी श्री महेन्द्र कुमारजी पाडलिया का दिनांक 28 मई को 79 वर्ष की आयु में शांतपरिणामों से देहावसान हो गया।

आप श्रेष्ठदानवीर, तत्त्वरसिक होने के साथ ही प्रतापगढ मुमुक्षु मण्डल के सक्रिय कार्यकर्ता थे। आपके देहावसान से मुमुक्षु मण्डल को अपूरणीय क्षति हुई है। आपने जीवित रहते हुए ही 25 हजार रूपये की राशि टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु प्रदान की; एतदर्थ धन्यवाद।

(2) टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित रमेशचंदजी शास्त्री 'दाऊ' जयपुर के पिताजी **श्री प्रेमचंदजी जैन** का दिनांक 11 जुलाई को शांत परिणामोंपूर्वक अपने निजगृह अछरौनी (म.प्र.) में देहावसान हो गया।

आप नित्य स्वाध्यायी, गहरे तत्त्वाभ्यासी मुमुक्षु थे। आपने अनेक बारह भावना, सामायिक पाठ, शताधिक भजन आदि अनेक पद्यात्मक रचनायें एवं सम्यक्त्व लीला, अकलंक-निकलंक, रामदर्शन आदि नाटकों की रचना की थी। आपकी स्मृति में 500/- रुपये जैनपथप्रदर्शक हेतु प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनन्द को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

दृष्टि का विषय

15 पाँचवाँ प्रवचन -डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

समयसार ग्रन्थाधिराज की छठवीं-सातवीं गाथा के आधार पर यह चर्चा चल रही है कि दृष्टि के विषय में पर्याय शामिल है या नहीं? तथा जिस पर्याय के सन्दर्भ में यह प्रश्न उठाया जा रहा है; उस पर्याय का वास्तविक अर्थ क्या है?

अध्यात्म में गुणभेद, प्रदेशभेद, द्रव्यभेद (विशेष) एवं कालभेद (पर्याय) - इन सभी की पर्यायसंज्ञा ही है और ये सभी पर्यायें द्रव्यार्थिकनय का विषय नहीं बनतीं; अतः दृष्टि का विषय भी नहीं बनतीं।

जब ऐसा कहा जाता है कि दृष्टि के विषय में पर्याय शामिल नहीं है, तब 'पर्याय' का अर्थ मात्र 'द्रव्य-गुण-पर्याय' वाली पर्याय ही नहीं होता है, उस **पर्याय में गुणभेद, प्रदेशभेद, द्रव्यभेद एवं कालभेद भी शामिल है।**

सातवीं गाथा में निश्चय-व्यवहार की 'अभेद सो निश्चय और भेद सो व्यवहार' इस परिभाषा को मुख्य किया है।

अब यदि कोई यह कहे कि ''यह बात तो सातवीं गाथा में नहीं, अपितु छठवीं गाथा में होनी चाहिए; क्योंकि पर्याय के निषेध की गाथा तो छठवीं है, सातवीं नहीं ?

उत्तर - सातवीं गाथा भी पर्याय के निषेध की ही है, गुण के निषेध की नहीं है; क्योंकि **'गुणभेद' को तो पर्याय ही कहा जाता है।** छठवीं गाथा में तो उपचरित-सद्भूतव्यवहार का निषेध है और सातवीं गाथा में 'भेद-व्यवहार' नामक अनुपचरित-सद्भूतव्यवहार का निषेध है। इसप्रकार **सातवीं गाथा में भी भेदरूप पर्याय का ही निषेध किया गया है।**

'द्रव्य' को यदि अनंतगुणों के रूप में अलग-अलग करके देखा जायेगा तो द्रव्य नहीं दिखेगा; बल्कि अनन्त गुण दिखेंगे; लेकिन जब अनन्तगुणों को अभेद करके देखेंगे, तब द्रव्य दिखाई देगा।

जैसे - शरीर में हाथ, पैर, नाक, कान सिर होते हैं। यदि इनमें से किसी एक को देखेंगे तो सिर्फ वही दिखेगा, शरीर नहीं दिखेगा। शरीर तो इन सभी के अभेद का नाम है।

उसीप्रकार ज्ञान-दर्शन-चारित्र पर जबतक दृष्टि रहेगी, तबतक आत्मा नहीं दिखेगी, ज्ञान-दर्शन-चारित्र ही दिखेंगे।

अनन्त गुणों के अभेद का नाम द्रव्य है। गुणों के भेद का नाम तो द्रव्य है ही नहीं।

यदि सारे हिन्दुस्तान में से राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र आदि सभी प्रान्त निकाल दिए जायें, तो फिर हिन्दुस्तान कहाँ बचा; क्योंकि इन सभी प्रान्तों के अभेद का नाम ही तो हिन्दुस्तान है। **जिसे हिन्दुस्तान देखना है, उसे इन सब भेदों को गौण करना होगा और अभेद को देखना पड़ेगा।**

द्रव्य में जो अनन्त गुण हैं, उन सभी में लक्षण भेद हैं। जैसे - ज्ञानगुण का काम जानना है, दर्शन गुण का काम देखना है, श्रद्धा गुण का काम अपनापन स्थापित करना है। इस सभी का लक्षण अलग-अलग होने से ये जुदे-जुदे हैं; लेकिन ये कभी भी बिखरकर अलग-अलग नहीं होते। **ये गुण, अनादिकाल से अनन्तकाल तक एक दूसरे से अनुस्यूत हैं। इसप्रकार, ऐसे अनन्तगुणों के अभेद को द्रव्य कहते हैं।**

पण्डित जयचन्दजी छाबड़ा ने भी लिखा है कि **भेद पर लक्ष्य रखने से अभेद वस्तु ख्याल में नहीं आती है; इसलिए उन्होंने कहा कि भेद को गौण कर दो।**

'भेद को गौण कर दो' ऐसा भी इसलिए कहते हैं; क्योंकि **यदि भेद को गौण नहीं किया तो उनका अभाव मान लिया जायेगा।**

जहाँ कहीं भी ऐसा कहा जाता है कि 'भेद तो है ही नहीं' तो वह इसलिए कहा जाता है कि जब भेद को गौण करने के लिए कहते हैं तो कोई गौण नहीं करता है, इसलिए उस भेद को भूल जाने के लिए ही कह देते हैं।

जैसे कोई व्यक्ति पुरानी बातों को गौण नहीं कर पाता है और बार-बार कहता है कि वे तो कभी-कभी याद आ ही जाती हैं, इसलिए कहे बिना रहा नहीं जाता तो उससे कहते हैं कि **उन पुरानी बातों को भूल जाओ, मान लो कि वे बातें कभी हुई ही नहीं थीं।**

उसीप्रकार अध्यात्म में जो यह कहा जाता है कि 'ये हैं ही नहीं' इस 'ही' का तो इसलिए प्रयोग करते हैं; क्योंकि तुम गौण नहीं कर पाते हो।

जैसे किसी चीज का निशाना लगाना होता है अथवा किसी चीज को बारीकी से देखना होता है तो एक आँख को बन्द करके देखते हैं।

यदि दूसरी आँख पूर्णतया बन्द नहीं करेंगे तो पदार्थ स्पष्ट नहीं दिखाई देगा। इसप्रकार **दूसरी आँख से नहीं देखने का नाम गौण करना है।**

यदि कोई कहे कि जब दूसरी आँख से देखना ही नहीं है तो उसको फोड़ ही लेते हैं तो उससे कहते हैं कि फोड़ो मत, अभी गौण

करने का अभ्यास करो।

यदि एक आँख फोड़ेगे तो एक आँख ही नहीं फूटेगी, अपितु तुम पूरे काने हो जाओगे अर्थात् तुम्हारा स्वरूप ही खण्डित हो जायेगा।

भेद भी वस्तु का स्वरूप उसीप्रकार है, जिसप्रकार अभेद।

यदि भेद को वस्तु में से निकाल दिया तो भेद ही खण्डित नहीं होगा, अपितु पूरी वस्तु ही खण्डित हो जायेगी; इसलिए वस्तु को अखण्डित रखने के लिए भेद को गौण करने के लिए कहा जाता है।

यदि अभेद वस्तु को स्पष्ट देखना हो तो भेद को गौण करना ही होगा; क्योंकि **भेद को गौण किए बिना अभेद वस्तु स्पष्ट दिखाई नहीं देती। अतएव भेदवाली आँख को सर्वथा बन्द करने की बात कही जाती है, उसे फोड़ लेने की नहीं।**

उस भेदवाली आँख को अभेद को देखते समय ही सर्वथा बन्द रखना है, हमेशा बन्द नहीं रखना है, समय आने पर उसे खोलना भी पड़ेगा।

अध्यात्म में तो गुणभेद, प्रदेशभेद, द्रव्यभेद एवं कालभेद – इन सभी भेदों का निषेध है, लेकिन यदि चारों को अलग–अलग नहीं कहना हो तो सामान्यतः 'भेद का निषेध' – ऐसा भी कह दिया जाता है; लेकिन उसका अर्थ चारों भेदों का निषेध ही है।

जब ऐसा कहा जाता है कि भेद को गौण कर दो, तब उसका अर्थ यही होता है कि पर्याय को गौण कर दो।

सामान्य, नित्य, एक और अभेद – ये चारों तो दृष्टि के विषय में शामिल हैं; लेकिन इन चारों का भेददृष्टि में शामिल नहीं है अर्थात् ये चारों अभेदरूप में दृष्टि के विषय में शामिल हैं।

भगवान महावीर २६००वीं जयन्ती पर भारत सरकार ने यह तय किया कि वह जैनियों को अर्थात् भगवान महावीर के भक्तों को दिल्ली में ५ एकड़ जमीन देना चाहती है, जहाँ पर भगवान महावीर का स्मारक बना सके। लेकिन सरकार दिगम्बरों को, श्वेताम्बरों को, स्थानकवासियों को अथवा तेरहपंथियों को नहीं; अपितु सभी जैनियों को यह जमीन देना चाहती है। अब यदि ये चारों पंथ अभेद होकर सरकार के पास जाते हैं तो ही सरकार जमीन देगी, अन्यथा नहीं देगी।

इस प्रसंग पर दिगम्बर जैन कहते हैं कि हमारे साधु कपड़े नहीं पहनते हैं, इनके साधु कपड़े पहनते हैं – इत्यादि बहुत भेद हैं, हम सब एक कैसे हो सकते हैं? लेकिन जब उन्हें पता चलता है कि जो ५ एकड़ जमीन मिल रही है, वह ५ अरब की होगी – ऐसा सुनकर सभी मिल जाते हैं।

दिगम्बर–श्वेताम्बर मिल जाते हैं। उनके विचार का बिन्दु यह नहीं होता है कि केवली को कवलाहार होता है या नहीं, स्त्रीमुक्ति होती है या नहीं? अर्थात् तत्त्वज्ञान, विचार का बिन्दु नहीं होता है।

वैसे ही आत्मा में गुणभेद, प्रदेशभेद, द्रव्यभेद एवं कालभेद तो रहेंगे; लेकिन यदि दृष्टि के विषयभूत आत्मा को प्राप्त करना है तो इन भेदों को गौण करना होगा अर्थात् अभेद पर दृष्टि करनी होगी।

एक गाँव की सच्ची घटना है। आज से ३५ साल पहले की है। उस गाँव में दो पार्टियाँ थीं, उनमें पीढ़ियों से वैर–विरोध था, वे आपस में रिश्तेदार भी थे। एकबार जब मैं और फूलचन्दजी सिद्धान्तशास्त्री वहाँ थे, तब वहाँ एक महाराजश्री आए और उन्होंने उन पार्टियों से कहा – ''जब तक तुम लोग एक नहीं होओगे, तब तक मैं आहार नहीं करूँगा।'' – ऐसा कहकर वे अनशन पर बैठ गए। उन महाराजश्री से हमारी अच्छी पहचान थी। हमने उन पार्टियों को बहुत समझाया, लेकिन वे नहीं माने।

लेकिन सुबह हमने यह सुना कि वे दोनों पार्टियाँ एक हो गईं और उन्होंने महाराजश्री के पास जाकर यह कह दिया – ''महाराज! हम एक हो गए हैं; अतएव आप आहार के लिए उठ जाइए।'' – इसप्रकार महाराजश्री ने आहार भी कर लिया।

जब हमने उनसे पूछा की हमारे बहुत समझाने के बाद भी तुम लोग नहीं माने, फिर अचानक ये परिवर्तन कैसे हो गया? तो उनमें से एक ने कहा कि दो मिनिट का काम था, मैं विरोधी पार्टी वालों के यहाँ गया और मैंने उन्हें समझाया कि अपनी पार्टियों के दो मुख्य जन जाकर महाराजश्री से कह देते हैं कि हम एक हो गए हैं।

वास्तव में एक होना नहीं है, मात्र कहना है। हमारी लड़ाई तो विधिवत् चलेगी, लेकिन अपनी इस लड़ाई में महाराजों को, पण्डितों को बीच में क्यों लाएँ ? हमें एक थोड़े ही होना है, हमें लड़ाई खत्म थोड़े ही करनी है, हम तो उंगठी[१] बाँध के कहेंगे।

उसीप्रकार मैं भी कहता हूँ कि भेद को गौण करके अभेद को दृष्टि का विषय बनाओ। चिन्ता मत करो, भेद तो रहेगा। उंगठी बाँध कर अभेद को दृष्टि का विषय बना लो; क्योंकि **दृष्टि का विषय अभेद ही है, भेद नहीं।**

यद्यपि भेद भी वस्तु के स्वरूप में शामिल है और अभेद भी वस्तु के स्वरूप में शामिल है; लेकिन अनुभूति, भेद के लक्ष्य से नहीं होती है।

भेद के लक्ष्य से विकल्प की उत्पत्ति होती है और अभेद के लक्ष्य से निर्विकल्प अनुभूति होती है; इसलिए इस प्रयोजन की सिद्धि के लिए भेद को गौण कर दो। (क्रमशः)

2 अगस्त 2015, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

कन्या महाविद्यालय का उद्घाटन संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान शाश्वत पारमार्थिक ट्रस्ट द्वारा देश के सर्वप्रथम जैनदर्शन कन्या महाविद्यालय का शुभारम्भ दिनांक 25 व 26 जुलाई को द्विदिवसीय कार्यक्रम के साथ हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के साथ तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त श्रीमती कमला भारिल्ल जयपुर, विदुषी राजकुमारी जैन दिल्ली एवं डॉ. स्वर्णलता जैन नागपुर द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला।

दिनांक 25 जुलाई को रात्रि में डॉ. भारिल्ल के प्रवचनोपरान्त पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर की अध्यक्षता में श्रीमती कमला भारिल्ल, श्रीमती गुणमाला भारिल्ल, विदुषी राजकुमारी जैन, श्रीमती बीना लुहाड़िया, श्रीमती श्रुति शास्त्री, श्रीमती सरोजबेन, श्रीमती अरुणाबेन, श्रीमती शिरोमणि जैन, श्रीमती रश्मि जैन, डॉ. कल्पना जैन, डॉ. किरण जैन, डॉ. निर्मला बैनाड़ा, डॉ. सीमा जैन, श्रीमती यशोधरा जैन, सुश्री पूजा जैन, श्रीमती संगीता पेठकर इत्यादि देश की प्रमुख 16 विदुषियों का सम्मान किया गया। साथ ही तत्त्वज्ञान व श्रावकाचार के संस्कारों की आवश्यकता विषय पर सभी विदुषियों का उद्बोधन हुआ।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. ममता जैन ने किया।

दिनांक 26 जुलाई को कन्या महाविद्यालय के उद्घाटन का कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री अमृतभाई मेहता अहमदाबाद एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, श्री प्रेमचंदजी कोटा, श्री मुकेशजी जैन इन्दौर, श्री आई.एस. जैन मुम्बई, पण्डित रतनचंदजी शास्त्री कोटा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, श्री महावीरजी पाटील शास्त्री सांगली, पण्डित सिद्धार्थकुमारजी दोशी रतलाम, श्री भरतजी भोरे कारंजा उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त श्री अजितजी बड़ौदा, श्री कन्हैयालालजी दलावत एवं श्री ललितकुमारजी कीकावत भी उपस्थित थे।

देश के विभिन्न नगरों से आये हुये लगभग 700 साधर्मियों के मध्य जब डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने अनादिकालीन तीर्थंकर परमात्माओं की परम्परा में भगवान महावीरस्वामी द्वारा उद्घाटित, परमपूज्य कुन्दकुन्द आदि आचार्यों द्वारा लिखित एवं आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा प्रचारित तत्त्वज्ञान को आत्महित की भावना से प्रचारित करने हेतु देश के सर्वप्रथम जैनदर्शन कन्या महाविद्यालय के उद्घाटन की घोषणा की, तब संपूर्ण मण्डप करतल ध्वनि से गूंज उठा।

कार्यक्रम का आभार प्रदर्शन डॉ. महावीरजी शास्त्री उदयपुर ने किया।

ज्ञातव्य है कि शास्त्री अध्ययन हेतु बालकों के लिये 3 महाविद्यालय हैं, परन्तु कन्या महाविद्यालय नहीं है। अत: इस आवश्यकता की पूर्ति हेतु यह महाविद्यालय प्रारम्भ किया गया है। इस वर्ष 13 बालिकाओं को प्रवेश दिया गया है, जो 5 वर्ष तक संस्कृत मीडियम में जैनदर्शन के साथ अन्य विषयों (हिन्दी, अंग्रेजी व संस्कृत) का अध्ययन करके राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर से शास्त्री की डिग्री प्राप्त करेंगी।

बैंक में पैसे जमा कराने वालों से निवेदन

जो भी साधर्मीजन टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु साहित्य की/दान की राशि सीधे बैंक में जमा कराते हैं, उनसे निवेदन है कि वे जमा राशि की सूचना फोन/पत्र/एस.एम.एस./वॉट्स अप/ई-मेल द्वारा जयपुर कार्यालय को भेजने का कष्ट करें। ताकि उसका जमाखर्च कर उसकी रसीद आपको भेजी जा सके। RTGS/NIFT/Check/Cash संस्था के बैंक खाते में जमा करा सकते हैं। खाते का विवरण निम्नानुसार है -

Name of Account	: **पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट**
Bank A/c No.	: 0247000100024619
Accounts Type	: Saving A/c
Name & Address of Bank	: PNB Bank, Bapu Nagar Branch
Bank Micr Code	: 302024004
Bank IFSC Code	: PUNB0024700
PAN NO.	: AAATP2595H

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.) फोन : (0141)2705581, 2707458

E-mail - ptstjaipur@yahoo.com

आगामी कार्यक्रम...

देवलाली-नासिक (महा.) में कार्तिक माह की अष्टाह्निका के अवसर पर दिनांक 18 से 25 नवम्बर 2015 तक **'चारों ही अनुयोग से वीतरागता (सम्यग्दर्शन) की प्राप्ति'** विषय पर **MONA (मुमुक्षु ऑफ नॉर्थ अमेरिका)** के तत्त्वावधान में शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, ब्र. हेमचंदजी देवलाली, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा एवं पण्डित चेतनभाई मेहता जयपुर का लाभ प्राप्त होगा। **सौजन्य :-** डॉ. सुशीलाबेन नवीनभाई लक्ष्मीचंद तेजाणी एवं मातुश्री रतनबेन लालजीभाई शाह परिवार।

शिविर में पधारकर अवश्य लाभ लें।

आवश्यकता

जैन पाण्डुलिपियों एवं प्राचीन ग्रन्थों के संरक्षण कार्य हेतु 2 जैन विद्वानों की आवश्यकता है। शास्त्री को प्राथमिकता। पूना (महा.) में भोजन-आवास की सुविधा सहित आकर्षक मानदेय। कम्प्यूटर का सामान्य ज्ञान आवश्यक है। **संपर्क -** पण्डित राजकुमारजी शास्त्री, उदयपुर 08003639039

प्रकाशन तिथि : 28 जुलाई 2015

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127